श्री यन्त्र साधना

डॉ.नारायण दत्त श्रीमाली

मनस्स चेतना केन्द्र,जोधपुर

रहस्य रोमांच
जीवन को झकझोर कर रख देने वाली
पुस्तक श्रृंखला
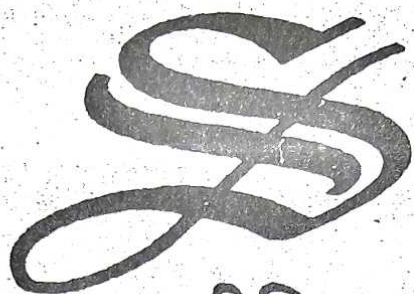
एस-सीरिज

अद्भुत और सांस रोक कर पढ़ने योग्य ये छः पुस्तकें

प्रथम सीरिज

- तांत्रिक त्रिजटा अघोरी
- भुवनेश्वरी साधना
- अप्सरा साधना सिद्धि
- सिद्धाश्रम
- मैं बाहें फैलाए खड़ा हूं
- हंसा! उड़हूं गगन की ओर

द्वितीय सीरिज

- सौन्दर्य
- तारा साधना
- जगदम्बा साधना
- तंत्र साधनाएं
- स्वर्ण सिद्धि
- उर्वशी साधना
- शिव साधना
- हिप्नोटिज्म

अरविन्द प्रकाशन,

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

टेली-०२९१-३२२०६

श्री यंत्र साधना

आशीर्वाद
डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

एस-सीरिज

संकलन, सम्पादन : नन्दकिशोर श्रीमाली

प्रकाशक

मनस चेतना केन्द्र

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

प्रथम संस्करण : चैत्र नवरात्रि 1995

मूल्य : 5/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका से साभार लेख

पुस्तिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या संपादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पुस्तिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पुस्तिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बारे में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव या न प्रभाव होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पुस्तिका कार्यालय से मंगवायें, सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद - विवाद मान्य नहीं होगा। पुस्तिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ आदि की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई ऐसी उपासना जप या मंत्र प्रयोग न करे जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पुस्तिका में प्रकाशित एवं विज्ञापित आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग पाठक अपनी जिम्मेवारी पर ही करें। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है कि वह संबंधित लाभ तुरत प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। किसी भी सम्बंध में किसी प्रकार की कोई आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या गुरु परिवार इस सम्बंध मे किसी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

अनुक्रमणिका

दो शब्द

अरविन्द प्रकाशन द्वारा कुछ माह पूर्व ही लघु पुस्तकें प्रकाशित करने की अभिनव योजना प्रारम्भ की गई थी। प्रथम दो सेट अत्यधिक लोकप्रिय होने के कारण एस-सीरिज के अन्तर्गत इस तृतीय सेट को एक प्रकार से समय से पूर्व ही प्रकाशित करना पड़ रहा है, अभी तक आध्यात्मिक और साधना-जगत् के कौतूहलों एवं रोचक विवरणों से भरी पुस्तकें इस रूप में प्रकाशित नहीं हुई थीं, किन्तु इस नूतन प्रयास द्वारा एक नई परम्परा का प्रादुर्भाव हुआ, जिससे **पाठक वर्ग ने भी बोझिलता और उबाऊ शास्त्रीय विवरणों के स्थान पर सरल और सहज भाषा में प्रामाणिक विवरणों के साथ वास्तविक अनुभूतियों को पढ़कर लाभ प्राप्त किया,** और वह भी सब कुछ मनोरंजक व सरस ढंग से।

हमारा प्रयास रहा है कि रोचकता व यथार्थपरकता का सुखद समन्वय कर पाठक वर्ग में साधना के प्रति नई धारणा विकसित की जाए। प्रथम दो सेट की हाथोंहाथ बिक्री हो जाना इस प्रयास की सफलता को सूचित करता है।

वास्तव में आज भी पाठक वर्ग अच्छे व ज्ञानात्मक साहित्य के लिए आग्रहशील है ही। अन्तर रुचियों में नहीं आया है वरन् अन्तर यह हो गया है कि अब समय की न्यूनता होने के कारण उसके पास समय नहीं है कि वह जटिल व गम्भीर

अध्ययन कर सके। ये लघु पुस्तकें इसी समस्या का निदान करने में सहायक हैं, इनमें उन्हीं साधना विधियों का प्रामाणिक व अनुभव सिद्ध वर्णन किया गया है, जो कि शास्त्रीय ग्रन्थों में अन्यथा ३० व ४० पृष्ठों में प्राप्त होता है।

इन पुस्तकों के प्रकाशन की प्रेरणा व आशीर्वाद हमें **पूज्यपाद गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी** के द्वारा प्राप्त हुआ है, और आधार रहा है उनके हजारों शिष्यों में से चुने हुए अनुभवी शिष्यों के द्वारा प्रयुक्त वे साधना विधियां, जिनके माध्यम से उन्होंने पूज्यपाद गुरुदेव के श्री चरणों में बैठकर सफलता पाई और अपने-अपने कर्म क्षेत्रों में सफल हुए। इन शिष्यों में डॉक्टर, इंजीनियर, विधिवेत्ता, व्यवसायी, राजनीतिज्ञ, नौकरीपेशा एवं सभी वर्ग से जुड़े व्यक्तित्व हैं, अपने-अपने क्षेत्र में शीर्षस्थ व्यक्तित्व हैं।

ऐसे शिष्यों का दायरा निरन्तर बढ़ता ही जा रहा है, क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव के आशीर्वाद तले प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका **"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान"** तथा इन लघु पुस्तकों के द्वारा साधनाओं को सम्पन्न कर अपने जीवन को सफल बनाने वाले व्यक्तियों की संख्या निरन्तर बढ़ती ही जा रही है, और वे आगे बढ़कर पूज्यपाद गुरुदेव से दीक्षित होते हुए अपने आध्यात्मिक जीवन को भी संवारने की क्रिया करने लगे हैं।

इस प्रस्तुत सेट में भी पूर्व दो सेट की भांति ही

ध्यात्मिक व व्यवहारिक जीवन की स्थितियों को साथ लेते
ए आठ पुस्तकें प्रस्तुत की जा रही हैं, जिससे पाठक का बहुविध
नोरंजन हो सके — **'मैं सुगन्ध का झोंका हूं'** पूज्यपाद गुरुदेव
प्रवचनों पर आधारित श्रेष्ठ आध्यात्मिक पुस्तक है,
गलामुखी साधना' में शत्रु संहार एवं अनिष्ट निवारण की
माणिक विधियां दी गई हैं, **'शक्तिपात'** व्यक्ति के अन्दर निहित
रालौकिक ज्ञान की क्षमता को स्पष्टता से उजागर करती है,
नसनाहट भरा सौन्दर्य' सौन्दर्य साधना से सम्बन्धित विशिष्ट
व्यवहारिक पुस्तक है, **'श्री यंत्र साधना'** जीवन में अतुलनीय
म्पदा को प्राप्त करने व उसे स्थायी बनाकर रखने का मार्ग स्पष्ट
रती है, भगवान गणपति का भारतीय जीवन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण
थान है, और इन्हीं की प्रामाणिक साधना-उपासना **'गणपति
ाधना'** के अन्तर्गत प्रस्तुत की जा रही है, **'सरस्वती साधना'** के
अन्तर्गत देवी के त्रिगुणात्मक स्वरूपों में से विशिष्ट वरदायक स्वरूप
का वर्णन उपयोगी साधनाओं सहित निहित है, **'पारदेश्वरी साधना'**
स्वर्ण निर्माण की प्रक्रिया में आधारभूत देवी की साधना विधि है।

इस प्रकार यह तृतीय सेट भी पूर्व के दो सेट की ही भांति सुविज्ञ पाठकों का स्वस्थ मनोरंजन करने के साथ - साथ ज्ञान-लाभ कराने में तथा व्यवहारिक जीवन में सहायक सिद्ध होगा, ऐसी ही हमारी मनोकामना है और समस्त पाठकों के प्रति शुभकामना भी।

- प्रकाशक

श्री सूक्त

विश्व में लक्ष्मी से सम्बन्धित जितने भी स्तोत्र हैं, उनमें यह स्तोत्र सर्वश्रेष्ठ एवं विश्वविख्यात है। यह स्तोत्र स्वयं मंत्रमय है, अतः सम्पुट देकर भी इस स्तोत्र का पाठ होता है। जो साधक लक्ष्मी को प्रसन्न करना चाहते हैं, जो अपने जीवन में पूर्ण भौतिक सुख प्राप्त करना चाहते हैं, उनके लिए यह स्तोत्र आवश्यक ही नहीं, अपितु अनिवार्य भी है।

इस स्तोत्र के प्रथम तीन पदों में स्वर्ण बनाने की विधि स्पष्ट की गई है। परीक्षणों से भी यह तथ्य स्पष्ट हुआ है, और इन पदों के मूल में जाकर अर्थ स्पष्ट करने से तथा उसके अनुसार क्रिया करने से ताम्र निश्चय ही पूर्णरूप से शुद्ध सोना बन जाता है।

वस्तुतः साधक को चाहिए कि वह इस स्तोत्र का पूर्ण तन्मयता के साथ पाठ करे और अपने जीवन में इसको महत्त्व दे। मेरा अनुभव यह रहा है कि जो साधक इस स्तोत्र का नित्य

एक बार पाठ करता है, उसे जीवन में भौतिक दृष्टि से किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

मैं नीचे मूल श्री सूक्त, उसका विनियोग और ध्यान स्पष्ट कर रहा हूं। साधक को सर्वप्रथम लक्ष्मी का ध्यान करके हाथ में जल लेकर विनियोग करने के बाद मूल 'श्री सूक्त' का पाठ करना चाहिए।

ध्यान –

या सा पद्मासनस्था विपुल कटि तटि पद्म पत्रायताक्षी।
गम्भीरावर्तनाभिःस्तनभरनमिताशुभ्र वस्त्रोत्तरीया।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रै र्मणिगण खचितैः स्नापिता हेमकुम्भै।
नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमांगल्ययुक्ता ।१।

कान्त्या कांचनसन्निभां हिमगिरि प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैर्हस्तौत्क्षिप्त
हिरणमयामृतघटैरासिचयमानां श्रियम्।
बिभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तं किरीटोज्ज्वलं क्षौमा
बद्धनितम्बबिम्बलसितां वंदेऽ रविन्द स्थिताम् ।२।

विनियोग –

ॐ हिरण्य वर्णामिति पंचदशर्चस्य श्री सूक्तस्य श्री आनंद, कर्दमचिक्लीतेन्दिरा सुता महर्षयः श्रीरग्निर्देवता, आद्यास्तिस्त्रोऽनुष्टुभः। चतुर्थी बृहती पंचमी षष्ठ्यो त्रिष्टुभौ,

ततोऽष्टावनुष्टुभः अन्त्या प्रस्तारपंक्तिः। हिरण्य वर्णामिति बीजम् ताम आवह जातवेद इति शक्तिः। 'कीर्तिमृद्धिं, ददातु मे इति कीलकम्। मम श्री महालक्ष्मी प्रासाद सिद्धयर्थे, न्यासे जपे च विनियोगः।

प्राचीन ग्रंथों में श्री सूक्त के मूल पाठ के पहले दो श्लोक या दो सूक्त हैं, जो कि मूल पाठ का ही भाग हैं, वे दोनों सूक्त अब तक गोपनीय रहे हैं। साधकों को चाहिए कि इन सूक्तों के पाठ से ही श्री सूक्त का प्रारम्भ करें।

ये दोनों सूक्त इस प्रकार हैं—

अथ श्री सूक्तं प्रारभ्यते –

त्वं श्रीरूपेन्द्रसदने मदनैकमाता,
ज्योत्स्नासि चन्द्रमसि चन्द्रमनुहरास्ये।
सूर्ये प्रभासितजगत्त्रितये प्रभासि;
लक्ष्मीं प्रसीद सततं नमतां शरण्ये।।

अर्थ – हे लक्ष्मी! आप इन्द्र के घर में रहने वाली श्री उपेन्द्र के घर में लक्ष्मी स्वरूप में स्थिर हैं। हे मदन जननी! आप चन्द्रमण्डल में चांदनी स्वरूप हैं। हे विधुवदने! आप सूर्यमण्डल में प्रभा स्वरूप और त्रिभुवन में प्रभा स्वरूपिणी हैं। हे शरण्ये! मैं आपको प्रणाम करता हूं, आप मुझ पर प्रसन्न हों।

त्वं जातवेदसि सदा दहनात्मशक्तिर्वेधास्त्वया,
जगदिदं विविधं विदध्यात्।
विश्वम्भराऽपि बिभृयादखिलं भवत्या;
लक्ष्मीं प्रसीद सततं नमतां शरण्ये।।

अर्थ – हे भगवती! आप अग्नि में जलाने वाली शक्ति स्वरूपिणी हैं। आपकी सहायता के बल से ही ब्रह्मा संसार की समस्त बातों को लिखने में समर्थ हैं। स्वयं विष्णु भी आपकी सहायता से जगत् की रक्षा करते हैं। हे देवी! हम आपके चरणों में प्रणाम करते हैं, आप हम पर प्रसन्न हों।

जो भक्ति-भावना से श्री सूक्त का पाठ करना चाहते हैं, उन्हें उपरोक्त सूक्तों से ही श्री सूक्त पाठ प्रारम्भ करना चाहिए।

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मावह।।

अर्थ – हे लक्ष्मी! हे अग्ने!! जिनका वर्ण सोने के समान उज्ज्वल है, जो हिरणी के समान नेत्रों वाली, सुंदर रूप वाली हैं, जिनके कंठ में सुवर्ण और चांदी के फूलों की माला शोभा पाती है, जो चन्द्रमा के समान प्रकाशवान हैं, जिनकी देह स्वर्णमय है, उन्हीं लक्ष्मी देवी का हमारे लिए आह्वान करो। हे जातवेद! आप ही देवताओं के होता हो, लक्ष्मी देवी को आह्वान करके बुलाने में केवल आप ही सामर्थ्यवान हैं।

तां म आवह जातवेदोलक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।

अर्थ – हे अग्ने! जिनके प्रसन्न हो जाने से स्वर्ण, भूमि, अश्व, पुत्र, पौत्र सब कुछ अनायास ही प्राप्त हो जाता है, उन्हीं महालक्ष्मी को आप हमारे लिए आवाहित करें।

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।

अर्थ – घोड़े जिनके आगे चलते हैं, जिनके मध्य में सम्पूर्ण रथ सुशोभित है, जो हाथियों की चिग्घाड़ से सबको जगाती हैं, जो एकमात्र लक्ष्मी, धन और ऐश्वर्य की आश्रय स्थली हैं, उन्हीं लक्ष्मी का मैं आह्वान करता हूं, वे आकर हमारी सेवा को स्वीकार करें।

कांसोस्मितां हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं।
तृप्तां तर्पयन्तीम् पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।

अर्थ – जिनका शरीर विकसित कमल के समान सुंदर और सुरम्य है, जिनका वर्ण सुवर्ण के समान दैदीप्यमान है, जो क्षीरसागर में से निकलने से सर्वदा आप्लावित हैं, जिनकी कांति सर्वदा उज्ज्वल रहती है, जो हमेशा परितृप्त और प्रसन्न होकर अपने आश्रित भक्तजनों के मनोरथ पूर्ण करती हैं, जो कमल के आसन पर विराजमान हैं, और कमल के समान ही वर्ण वाली

हैं, मैं उन्हीं श्री लक्ष्मी देवी का आह्वान करता हूं।

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव जुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमीं शरणमहं प्रपद्ये ऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ।।

अर्थ – जो चन्द्रमा के समान प्रभाव युक्त हैं, जिनका शरीर दीप्तिवान है, जो यश से प्रकाशवान हैं, देव लोक में जिनकी हमेशा देवता आराधना करते हैं, जो उदारचित्त वाली हैं, जो कमल के समान रूप वाली और ईकार स्वरूपिणी हैं, मैं उन्हीं लक्ष्मी देवी की शरण में हूं। हे देवी! मैं आपको प्रणाम करता हुआ प्रार्थना करता हूं कि शीघ्रातिशीघ्र मेरी दरिद्रता दूर करें।

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तववृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तुमायान्तरायाश्च बाह्या ऽलक्ष्मीः।।

अर्थ – हे देवी! आपका वर्ण सूर्य के समान उज्ज्वल है। आपकी तपस्या के प्रभाव से ही समस्त वृक्ष, फल, बिल्व-वृक्ष, आदि उत्पन्न होते हैं। हे शरण्ये! उन्हीं बिल्व-वृक्षों के पके हुए फल समूह के साथ आप हमारे अंदर और बाहर की दरिद्रता को दूर करें।

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतः सुराष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।

अर्थ – हे देवी! आपकी कृपा से शिव का मित्र कुबेर और कीर्ति देवी मणि-रत्नों के साथ मेरे घर में

हमेशा-हमेशा के लिए उपस्थित हों। मैंने इस संसार में देह धारण किया है, अतः आप आकर हमें हमेशा के लिए कीर्ति और समृद्धि प्रदान करें।

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।।

अर्थ – हे देवि! मैं आपकी कृपा से ही क्षुधा और तृष्णा के मल से परिपूर्ण अलक्ष्मी का विनाश करने में समर्थ हो सकूंगा। हे देवी! आप हमारे घर से दरिद्रता, अभूति और असमृद्धि को दूर करें।

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।

अर्थ – गंध ही जिनका लक्षण है अर्थात् जिनकी उपस्थिति से ही सर्वत्र सुगन्ध व्याप्त हो जाती है, जिनको कोई भी परास्त करने में समर्थ नहीं है, जो नित्य गौ इत्यादि पशुओं से युक्त हैं, जो समस्त जीवों की आधार हैं, मैं उन्हीं लक्ष्मी देवी का आह्वान करता हूं।

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।

अर्थ – हे देवी! आप प्रसन्न होकर मुझे आशीर्वाद दें। आपकी कृपा से ही मेरा मनोरथ पूर्ण हो सकेगा। आपकी कृपा

से ही मेरा संकल्प सिद्ध हो सकेगा। मेरी बुद्धि हमेशा सत्य वचन बोलने में रहे। मुझे पशुओं से प्राप्त अमृत मिलता रहे, मेरे घर में चारों ओर धन-धान्य की समृद्धि बनी रहे व आपकी कृपा से ही मेरा यश विश्व में व्याप्त हो।

कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं-पद्ममालिनीम्।।

अर्थ – संसार की समस्त प्रजा कर्दम से ही उत्पन्न हुई है, इसलिए हे कर्दम! आप हमारे स्थान में स्थित हों और अपनी जननी पद्ममालिनी लक्ष्मी देवी को हमारे वंश में स्थापित करें, जिससे मेरी आगे की सारी पीढ़ियां सुख-समृद्धि से युक्त बनी रहें।

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।

अर्थ – हे कर्दम! जल देवता नित्य चिकनाई पूर्ण द्रव्य उत्पन्न करें। आप हमारे स्थान में स्थित हों और अपनी जननी लक्ष्मी देवी को हमारे कुल में स्थापित करें।

आर्द्रां यस्करणीं यष्टिं पिंगलां पद्मालिनीम्।
चंद्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मींजातवेदोमावह।।

अर्थ – हे अग्ने! जो क्षीरसागर से उत्पन्न महालक्ष्मी है, जिनके हाथ में शोभायमान यष्टि है, जो पुष्टि युक्त हैं, जो पीले वर्ण वाली हैं, जो पद्मचारिणी, पद्ममालिनी और जिनका

निवास स्थान पद्म पर ही है, जो सुवर्ण के समान देदीप्यमान हैं, उन्हीं लक्ष्मी देवी का हमारे लिए आप आह्वान करें।

आर्द्रां यः करणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।

अर्थ – हे अनल! जो गीले देह वाली हैं, जिनके हाथ में सुंदर शोभायमान यष्टि है, जिनकी देह सोने के समान चमकने वाली है, जिनकी कांति सूर्य के समान दैदीप्यमान है, उन्हीं लक्ष्मी देवी का हमारे निमित्त आह्वान करें।

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।

अर्थ – हे अग्ने! जिसकी कृपा से बहुत सा स्वर्ण, गौ, अश्व, दास-दासी, पुत्र-पौत्र इत्यादि प्राप्त हो सकते हैं, जिसकी कृपा से संसार में यश, और सम्मान प्राप्त हो सकता है, आप उन्हीं लक्ष्मी देवी का हमारे लिए आह्वान करें।

फल –

यःशुचिः प्रयतो भूत्वा जुहूयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।

अर्थ – यह लक्ष्मी से सम्बन्धित सूक्त अत्यन्त उच्चकोटि का और महत्त्वपूर्ण है, इसलिए जो पूर्ण भौतिक सुख, सम्पत्ति और उन्नति चाहते हैं, जो यश, सम्मान और जीवन में अग्रगण्यता चाहते हैं, उन्हें श्री सूक्त के उपरोक्त पंद्रह श्लोकों

का पाठ नित्य करना चाहिए।

इस प्रकार श्री सूक्त के पाठ करने वाले साधकों को चाहिए कि वे उपरोक्त सोलह श्लोकों का पाठ नियम पूर्वक करें। इसमें श्री सूक्त से सम्बन्धित पंद्रह श्लोक हैं, और एक श्लोक फल से सम्बन्धित है, इस प्रकार कुल सोलह श्लोक मिलकर पूर्ण श्री सूक्त माना जाता है।

श्री सूक्त से सम्बन्धित कई अनुष्ठान हैं। पाठकों की जानकारी के लिए कुछ अनुष्ठान विधियां स्पष्ट कर रहा हूं।

१. यदि नित्य १०८ पाठ श्री सूक्त के करें, तो चालीस दिनों में अनुष्ठान सम्पन्न होता है और उसकी भौतिक मनोकामना पूर्ण होती है।

२. लक्ष्मी बीज का सम्पुट देकर भी श्री सूक्त का पाठ किया जाता है। लक्ष्मी बीज सम्पुट इस प्रकार है –

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

सबसे पहले उपरोक्त बीज मंत्र पढ़कर फिर श्री सूक्त के १६ श्लोक पढ़ें और बाद में पुनः इसी बीज मंत्र को पढ़ने से एक पाठ माना जाना चाहिए, इस प्रकार नित्य १०८ पाठ किए जा सकते हैं।

३. धनदा लक्ष्मी प्रयोग के लिए एक अलग सम्पुट है, जिसको

श्री सूक्त के प्रारम्भ और अंत में पढ़ा जाता है। यह धनदा लक्ष्मी सम्पुट इस प्रकार है —

ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं वं ऐं ब्लूं रं ॐ

महालक्ष्म्यै नमो नमः स्वाहा।।

४. दारिद्र्य विनाशक प्रयोग के लिए प्रत्येक सूक्त के पहले और बाद में दरिद्रता विनाशक मंत्र का उच्चारण होता है। मैं एक श्लोक का प्रयोग समझा देता हूं। बाकी सभी श्लोकों में इसी प्रकार मंत्र का सम्पुट प्रयोग किया जाएगा।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये
प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
ॐ हिरण्य वर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मावह।।
दारिद्र्य दुःख भय हारिणीं का त्वदन्या।
सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चित्ता।।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये
प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।। १।।

इस प्रकार यह एक श्लोक पूर्ण हुआ। इसी प्रकार सोलह श्लोकों के साथ सम्पुट देने से श्री सूक्त का एक पाठ

पूरा माना जाता है। इस प्रकार भी दिन भर में १०१ पाठ करने का विधान है।

इसके अलावा भी श्री सूक्तं से सम्बन्धित कई प्रयोग और अनुष्ठान हैं। साधक किसी योग्य गुरु से ज्ञान प्राप्त कर इससे सम्बन्धित प्रयोग सम्पन्न कर सकता है।

पर यह मेरा अनुभव है कि किसी भी प्रकार के श्री सूक्त का पाठ किया जाए, वह निश्चय ही फलदायक है और इसका प्रभाव तुरंत अनुभव होता है।

श्री सूक्त का अनुष्ठान पूर्ण होने के बाद निम्न श्लोक से क्षमा-याचना करें –

अपराध सहस्र भाजन पतितं भीम भवार्णवोदरे।
अगति शरणागतं देवि कृपया केवलमात्मसात्कुरु।।

सिद्धप्रद यंत्र
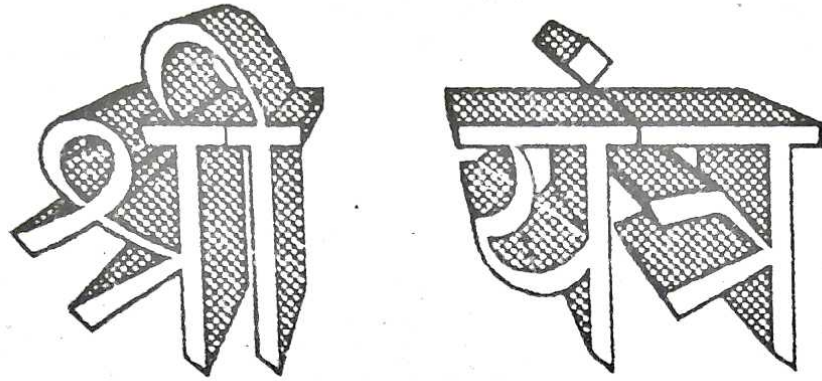
कथा प्रसिद्ध है कि एक बार लक्ष्मी अप्रसन्न होकर वैकुण्ठ चली गई। इससे पृथ्वी तल पर काफी समस्याएं पैदा हो गईं। ब्राह्मण और वणिक वर्ग बिना लक्ष्मी के दीन-हीन, असहाय से घूमने लगे, तब ब्राह्मणों में श्रेष्ठ वशिष्ठ ने निश्चय किया कि मैं लक्ष्मी को प्रसन्न कर भूतल पर ले आऊंगा।

जब वशिष्ठ वैकुण्ठ में जाकर लक्ष्मी से मिले, तो ज्ञात हुआ लक्ष्मी अप्रसन्न है, और वह किसी भी स्थिति में भूतल पर आने को तैयार नहीं है, तब वशिष्ठ वहीं बैठकर विष्णु की आराधना करने लगे, जब विष्णु प्रसन्न होकर प्रकट हुए, तो वशिष्ठ ने कहा—बिना लक्ष्मी के पृथ्वीवासी दुःखी हैं, हमारे आश्रम उजड़ गए

हैं, व्यापार चौपट हो गया है, और जीवन का उमंग और उत्साह समाप्त हो गया है।

भगवान विष्णु वशिष्ठ को साथ लेकर लक्ष्मी के पास गए और उन्हें मनाने लगे, परंतु लक्ष्मी नहीं मानी और उसने दृढ़ता पूर्वक कहा कि मैं किसी भी स्थिति में भूतल पर जाने को तैयार नहीं हूं।

निराश होकर वशिष्ठ पुनः भूतल पर लौट आए, और लक्ष्मी के निर्णय से सबको अवगत करा दिया। सभी किंकर्त्तव्यविमूढ़ थे कि क्या किया जाए? तब देवताओं के गुरु बृहस्पति ने कहा कि अब एकमात्र उपाय **'श्री यंत्र'** साधना ही बची है, और यदि सिद्ध श्री यंत्र बनाकर स्थापित किया जाए, तो निश्चय ही लक्ष्मी को आना पड़ेगा।

बृहस्पति की बात से ऋषियों में हर्ष की लहर दौड़ गई और उन्होंने बृहस्पति के निर्देशन में धातु पर श्री यंत्र का निर्माण किया और उसे मंत्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठा युक्त कर, दीपावली से दो दिन पूर्व धन त्रयोदशी को स्थापित कर विधि-विधान से षोडशोपचार पूजा की। पूजा समाप्त होते-होते लक्ष्मी स्वयं वहां उपस्थित हो गई और बोली— **मैं किसी भी स्थिति में यहां आने के लिए तैयार नहीं थी, यह मेरा प्रण था, परंतु बृहस्पति की युक्ति से मुझे आना ही पड़ा, श्री यंत्र मेरा आधार है और इसमें मेरी आत्मा निहित है।**

यह कथा कई स्थानों पर वर्णित है, इससे यह भली-भांति स्पष्ट है कि श्री यंत्र अपने-आप में लक्ष्मी का सर्वाधिक प्रिय यंत्र है और जहां पर यह यंत्र स्थापित है, वहां लक्ष्मी स्थायी रूप से रहती ही है। साथ ही ऋण-मोचन में यह यंत्र पूर्ण सफलतादायक है। **भारद्वाज ऋषि** के अनुसार यह यंत्र स्वयं ही पूर्ण होता है,-यदि धातु निर्मित, मंत्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठा युक्त हो।

इस यंत्र के बारे में मात्र भारतवर्ष में ही शोध व जिज्ञासा नहीं है, अपितु पूरे विश्व में है। पाश्चात्य तंत्र विशेषज्ञ **'वुडरोफ'** ने एक बार कहा था कि जिस दिन श्री यंत्र को भली प्रकार से समझ लिया जाएगा, उस दिन विश्व का स्वरूप ही बदल जाएगा, जैसा की **'मंत्र महार्णव'** में लिखा है – श्री सूक्त के १६ मंत्र हैं, और इन मंत्रों में किसी भी धातु से सोना बनाने की पूर्ण विधि संकेत व गुप्त रूप से स्पष्ट की गई है, **जिस दिन श्री सूक्त के इन मंत्रों का गूढ़ार्थ स्पष्ट हो जाएगा, उस दिन किसी भी धातु से स्वर्ण बनाने की रासायनिक प्रक्रिया का ज्ञान भी विश्व को हो जाएगा, श्री सूक्त को समझने की कुंजी श्री यंत्र में निहित है।**

महर्षि कणाद ने कहा है कि श्री यंत्र यदि मंत्रसिद्ध है, तो इस पर अन्य किसी भी प्रकार का प्रयोग या उपाय करने की जरूरत नहीं, क्योंकि वह स्वयं ही मंत्र चैतन्य हो जाता है, और जहां पर भी यह स्थापित होता

है, उसी को अनुकूल फल और प्रभाव देने लग जाता है, जैसे अगरबत्ती किसी व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित नहीं होती, वह जहां भी लगाई जाती है, वहीं पर सुगन्ध बिखेरने लग जाती है।

श्री यंत्र का स्वरूप

श्री यंत्र अपने-आप में रहस्यपूर्ण है। यह सात त्रिकोणों से निर्मित है। मध्य बिंदु त्रिकोण के चतुर्दिक अष्ट कोण है, इसके बाद दस कोण तथा सबसे ऊपर चतुर्दश कोण से यह श्री यंत्र निर्मित होता है। **यंत्र ज्ञान** में इसके बारे में स्पष्ट किया है—

चतुर्भिः शिवचक्रैश्च शक्ति चक्रैश्च पंचभिः।
नव चक्रैश्च संसिद्धः श्री चक्रं शिवयोर्वपुः।।

श्री यंत्र के चतुर्दिक तीन परिधियां खींची जाती हैं, वे अपने-आप में तीन शक्तियों की प्रतीक हैं। इसके नीचे षोडश पद्मदल होता है तथा इन षोडश पद्म के भीतर अष्टदल का निर्माण होता है, जो कि अष्टलक्ष्मी के परिचायक हैं। अष्टदल के भीतर चतुर्दश त्रिकोण निर्मित होते हैं, जो चतुर्दश शक्तियों के परिचायक हैं तथा इसके भीतर दस त्रिकोण स्पष्ट देखे जा सकते हैं, जो दस सम्पदा के प्रतीक हैं। दस त्रिकोणों के भीतर अष्ट त्रिकोण निर्मित होता है, जो अष्ट देवियों का सूचक कहा

गया है। इसके भीतर त्रिकोण होता है, जो लक्ष्मी का त्रिकोण माना जाता है। इस लक्ष्मी के त्रिकोण के भीतर एक बिंदु निर्मित होता है, जो भगवती का सूचक है। साधक को इस बिंदु पर स्वर्ण सिंहासनारूढ़ भगवती लक्ष्मी की कल्पना करनी चाहिए।

इस प्रकार से यह श्री यंत्र २८१६ शक्तियों अथवा देवियों का सूचक है, और इस श्री यंत्र की पूजा इन सारी शक्तियों की समग्र पूजा है।

श्री यंत्र से सम्बन्धित साहित्य विस्तृत रूप में है। भारतीय ग्रंथों के साथ-साथ पाश्चात्य ग्रंथों में भी श्री यंत्र की विशेष रूप से प्रंशसा की गई है। इस यंत्र का उत्कीर्ण इस विधि से है कि वह स्वतः ही चैतन्य और मंत्र युक्त बन जाता है। प्रत्येक परिधि और त्रिकोण परस्पर इस प्रकार से सम्बन्धित है कि यंत्र विज्ञान के अनुसार विशेष सफलतादायक बन जाता है। वास्तव में ही जिसके पास इस प्रकार का अमूल्य श्री यंत्र हैं, वह संसार में गौरवशाली, श्रेष्ठ और भाग्यवान व्यक्ति है।

पूजन सामग्री एवं यंत्र भेद

जब श्री यंत्र घर में स्थापित हो जाए, तब उसका पूजन किया जा सकता है। श्री यंत्र को स्थापित करनें के लिए कोई विशेष विधि-विधान की आवश्यकता नहीं है, यंत्र उत्कीर्ण करने में बहुत सावधानी की जरूरत है। इस बात का ध्यान रखना

चाहिए कि यंत्र उत्कीर्ण मध्य बिंदु से प्रारम्भ होना चाहिए, परंतु दरिद्रता -नाश एवं सिद्धि के लिए यंत्र बाह्य परिधि से प्रारम्भ होकर मध्य बिंदु तक उत्कीर्ण किया जाता है। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि प्रथम पूर्व परिधि अंकित होनी चाहिए, उसके बाद क्रमशः दक्षिण, पश्चिम तथा उत्तर परिधि का निर्माण होना चाहिए।

यंत्र को सावधानी पूर्वक बनाना चाहिए, क्योंकि यदि यंत्र निर्माण में जरा सी भी गलती हो जाती है, तो उसका प्रभाव न्यून हो जाता है। यदि स्वयं के लिए सम्भव न हो, तो किसी योग्य व्यक्ति से इसका निर्माण करा लेना चाहिए। इसके बाद विशेष विधि-विधान से इसे मंत्र चैतन्य, मंत्रसिद्ध और प्राण-प्रतिष्ठातायुक्त बना लेना चाहिए, ऐसा होने के बाद ही यह स्थापित करने योग्य होता है।

अपने घर में किसी भी दिन श्री यंत्र को स्थापित किया जा सकता है। "तंत्र समुच्चय" के अनुसार किसी भी बुधवार को प्रातः सूर्योदय से दस बजे के भीतर-भीतर स्नान कर, शुद्ध, वस्त्र धारण कर इस यंत्र को पूजा स्थान में स्थापित किया जा सकता है।

इस यंत्र को पूजा स्थान के अलावा अपनी अलमारी में भी रखा जा सकता है, फैक्ट्री या कारखाने में स्थापित किया जा सकता है, और इसे किसी महत्त्वपूर्ण स्थान पर भी स्थापित किया जा सकता है। जिस दिन से यह स्थापित होता है, उसी

दिन से इसका प्रभाव अनुभव होने लग जाता है।

शास्त्रों के अनुसार मंत्रसिद्ध, चैतन्य श्री यंत्र की नित्य पूजा आवश्यक नहीं है, और न ही नित्य जल से स्नान आदि कराने की जरूरत है। यदि सम्भव हो, तो इस पर पुष्प, इत्र आदि समर्पित किया जा सकता है, नित्य इसके सामने अगरबत्ती व दीपक लगा देना चाहिए, पर यह अनिवार्य नहीं है। यदि किसी दिन श्री यंत्र की पूजा नहीं भी होती या इसके सामने अगरबत्ती व दीपक नहीं लगाया जाता, तब भी इसके प्रभाव में कोई न्यूनता नहीं आती।

शुभ अवसरों पर श्री यंत्र की पूजा का विधान है। जन्मदिन या दीपावली के दिन अवश्य ही श्री यंत्र की पूजा करनी चाहिए।

पूजन सामग्री एवं यंत्र भेद –

यंत्र साधना एवं पूजा के लिए निम्नलिखित सामग्री पहले से ही मंगा कर रख लेनी चाहिए –

कुंकुम, अबीर, लाल रंग, पीले रंग, हरे रंग, नीले रंग, तथा श्वेत रंग का गुलाल, मौली (कलावा), सुपारियां गोल, केसर, बताशा, दुग्ध-प्रसाद, कपूर, इलायची, यज्ञोपवीत, नारियल, चावल, बादाम, अगरबत्ती, लौंग, काली मिर्च, शहद, फल, इत्र, दीपक, दूध, दही, घृत, शक्कर, पान, भोजपत्र, पुष्प,

गंगाजल, कुंए का शुद्ध जल, कमलगट्टे, ताम्र कलश आदि।

श्री यंत्र निर्माण अपने-आप में जटिल प्रक्रिया है, और जब तक सही रूप में यंत्र उत्कीर्ण नहीं होता, तब तक उसमें सफलता भी सम्भव नहीं। मुख्यत: श्री यंत्र आठ प्रकार के होते हैं:

१. मेरुपृष्ठीय श्री यंत्र, २. कूर्मपृष्ठीय श्री यंत्र,
३. धरापृष्ठीय श्री यंत्र, ४. मत्स्यपृष्ठीय श्री यंत्र,
५. ऊर्ध्वरूपीय श्री यंत्र, ६. मातंगीय श्री यंत्र,
७. नवनिधि श्री यंत्र, ८. वाराहीय श्री यंत्र।

इनमें से गृहस्थ व्यक्तियों के लिए कूर्मपृष्ठीय श्री यंत्र ही उपयुक्त है, ऐसा श्री यंत्र ही व्यापार-वृद्धि, ऋण-मोचन, संतान-लाभ तथा भौतिक उन्नति के लिए अनुकूल है। इसीलिए प्रत्येक गृहस्थ साधक को चाहिए कि वह अटूट सम्पत्ति, दरिद्रता नाश, सम्पूर्ण ऐश्वर्य, भौतिक सुख-सम्पदा तथा अद्‌भुत ऐश्वर्य सिद्धि के लिए कूर्मपृष्ठीय श्री यंत्र को ही अपने घर में, दुकान में या कार्यालय में भी स्थापित कर सकते हैं। शास्त्रों के अनुसार यदि नया मकान बनाना हो, तो उसकी नींव में भी श्री यंत्र स्थापित किया जाता है, जिससे कि उसमें रहने वाले आगे के पूरे जीवन में ऐश्वर्यवान बने रहें।

यंत्र पूजा –

सर्वप्रथम गणपति एवं गुरु का पूजन करना चाहिए, उसके बाद श्री यंत्र के सामने शुद्ध वस्त्र पहिन कर, रेशमी या सूती आसन पर पूर्व या उत्तर की तरफ मुंह कर साधक को स्वयं या अपनी पत्नी के साथ बैठ जाना चाहिए।

श्री यंत्र को लाल आसन पर स्थापित करना चाहिए और इसको समतल भूमि पर स्थापित किया जाता है। दीवार के सहारे टिकाने की आवश्यकता नहीं होती है।

इसके बाद श्री यंत्र का ध्यान करें –

ध्यान –

दिव्या परां सुधवलारुण चक्रयातां,
मूलादि बिंदु परिपूर्ण कलात्मकायाम्।
स्थित्यात्मिका शरधनुः सुणिमासहस्ता;
श्रीचक्रतां परिणतां सततंनमामि।।

श्री यंत्र-ध्यान के बाद श्री यंत्र-प्रार्थना करनी चाहिए, यदि नित्य इस प्रार्थना का १०८ बार उच्चारण किया जाए, तो अपने-आप में अत्यन्त लाभप्रद देखा गया है -

धनं धान्यं धरां हर्म्यं कीर्तिमायुर्यशः श्रियम्।
तुरगान् दन्तिनः पुत्रान् महालक्ष्मीं प्रयच्छ मे।।

सब में प्रभाव पूर्ण एवं सर्वाधिक लाभप्रद लक्ष्मी बीज

मंत्र है, जिसका प्रयोग मैंने अपने जीवन में किया है, और जिन व्यक्तियों को भी मैंने इस बीज मंत्र के बारे में बताया है, उनके लिए भी यह लक्ष्मी बीज मंत्र विशेष अनुकूल रहा है।

लक्ष्मी बीज मंत्र –

लक्ष्मी से सम्बन्धित ग्रंथों के अनुसार यदि मंत्रसिद्ध श्री यंत्र के सामने कमलगट्टे की माला से नित्य लक्ष्मी बीज मंत्र की एक माला फेरी जाए, तो आश्चर्यजनक प्रभाव देखने को मिलता है।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

इसके बाद लक्ष्मी की आरती कर अपनी मनेच्छा प्रकट करनी चाहिए।

वस्तुतः श्री यंत्र का प्रभाव भारतवासियों ने काफी पहले जान लिया था। सातवीं शताब्दी से कई मंदिरों में मूर्तियों के आसन के नीचे श्री यंत्र अंकित देखे गए हैं। एक जानकारी के अनुसार सुना है कि जब श्री नाथ जी के मंदिर का निर्माण हुआ, तब यह प्रश्न उठा कि श्री नाथ जी के भोग के लिए लाखों रुपयों की व्यवस्था कैसे होगी? तब श्री वल्लभाचार्य के प्रथम पुत्र श्री गोस्वामी जी ने श्री यंत्र को सिद्ध कर, श्री नाथ जी की चरण-चौकी के नीचे स्थापित कर दिया था, और उस पर

श्री नाथ जी की मूर्ति प्रतिस्थापित की गई थी। ऐसा कहा जाता है कि इससे इस मंदिर में साक्षात् लक्ष्मी का निवास हो गया है।

'उदयपुर महाराणा' की पूजा में स्वर्ण पत्र पर कूर्मपृष्ठीय श्री यंत्र है, जिसकी वहां नित्य पूजा होती है। 'रमण महर्षि' ने भी अपनी मृत्यु के थोड़े समय पूर्व अपने आश्रम में श्री यंत्र की स्थापना कराई थी।

दिल्ली में अत्यन्त विश्वस्त व्यक्ति से ज्ञात हुआ था कि भारत के विख्यात जनसेवी उद्योगपति परिवार की जो पुस्तैनी गद्दी है, वह ज्यों की त्यों इस समय भी कायम है, और उसके नीचे सिद्ध श्री यंत्र निर्मित है।

दक्षिण के प्रसिद्ध 'तिरुपति मंदिर' की नींव में सिद्ध श्री यंत्र देखा जा सकता है। आबू के 'दिलवाड़ा मंदिर' के प्रशस्त खम्भों पर भी श्री यंत्र अंकित है। राजस्थान के प्रसिद्ध 'ओसियां की देवी' के द्वार पर भी श्री यंत्र निर्मित है, जिसका प्रभाव आज भी बना हुआ है।

आश्चर्य की बात तो यह है कि इस यंत्र के बारे में जानकारी भारत में ही नहीं, अपितु जहां-जहां भी भारतवासी गए, वहां-वहां श्री यंत्र को अपने साथ लेते गए, और इसके प्रभाव को विस्तार देते गए। नेपाल में 'पशुपतिनाथ मंदिर' के मुख्य द्वार पर श्री यंत्र भव्य रूप में अंकित है, पशुपतिनाथ के शिवलिंग पर आठों श्री यंत्र भव्य रूप में उत्कीर्ण हैं। मॉरिशस

के 'भगवान राम के मंदिर' में राम के चरणों पर श्री यंत्र अंकित है। इसी प्रकार जर्मनी में भी कई मूर्तियों, मंदिरों के खम्भों पर श्री यंत्र को भव्यता से उत्कीर्ण देखकर आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है।

वास्तव में वह घर दुर्भाग्यशाली है, जिसके घर में यह भव्य श्री यंत्र स्थापित नहीं है। जैन शास्त्रों में भी इस यंत्र की प्रशंसा की गई है, और लक्ष्मी को प्रसन्न करने तथा व्यापार-वृद्धि के लिए श्री यंत्र को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। इसमें कोई दो राय नहीं कि श्री यंत्र में स्वतः ही कई सिद्धियों का वास है, योगियों, संन्यासियों, तांत्रिकों, व्यापारियों, गृहस्थ व्यक्तियों और विदेशियों ने एक स्वर से स्वीकार किया है कि यदि दीपावली के अवसर पर श्री यंत्र घर में स्थापित कर उसकी पूजा की जाती है, तो उसके जीवन में भौतिक दृष्टि से किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता. घर में प्रसन्नता का वातावरण बना रहता है, आर्थिक उन्नति तथा व्यापारिक सफलता के लिए तो यह यंत्र बेजोड़ है।

इसके अतिरिक्त ऋण-मुक्ति, रोग-निवृत्ति, स्वास्थ्य लाभ, पारिवारिक प्रसन्नता, आर्थिक सफलता और मांगलिक अवसर प्राप्ति के लिए यह यंत्र सर्वश्रेष्ठ माना गया है। मंत्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठा युक्त प्रामाणिक श्री यंत्र का घर में स्थापित कर देना ही पर्याप्त है, क्योंकि केवल मात्र स्थापित करने से ही यह असीम सफलता देने में सहायक बन जाता है।

कुबेर यंत्र

भारतीय ग्रंथों में कुबेर को धन का देवता माना गया है, और देवताओं में भी कुबेर को सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है, क्योंकि वह आर्थिक समृद्धि का देवता है।

यह मंत्र प्रामाणिक होने के साथ-साथ प्रत्येक गृहस्थ के लिए उपयोगी है। इस मंत्र का जप पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है, यदि यह सम्भव न हो, तो किसी योग्य विद्वान् से भी कुबेर मंत्र के जप करवाए जा सकते हैं।

विधान –

घर के पूजा स्थान में भगवती लक्ष्मी का चित्र स्थापित कर लेना चाहिए, इसके बाद उसकी केसर आदि से षोडशोपचार पूजा करके उसमें लक्ष्मी का आह्वान करना चाहिए, इसके साथ ही इसके पास कुबेर यंत्र की स्थापना कर लेनी चाहिए।

कुबेर यंत्र अपने-आप में पूर्णतः गोपनीय रहा है, यद्यपि तंत्र-मंत्र से सम्बन्धित कई ग्रंथों में कुबेर यंत्र का वर्णन

आया है, परंतु इसका सही रूप में अंकन कहीं पर भी प्राप्त नहीं हुआ। लेखक इसकी खोज में था और कुछ वर्षों पूर्व उसे अपने गुरु से कुबेर यंत्र के बारे में पूर्णता से ज्ञात हुआ था, इस यंत्र के बारे में कहावत है कि पिता को चाहिए कि वह अपने पुत्र को भी कुबेर यंत्र का ज्ञान न दे। गुरु को भी चाहिए कि वह अपने जीवन में अत्यन्त प्रिय शिष्य को ही इस यंत्र का ज्ञान दे। इन सारे तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि यह यंत्र अत्यन्त गोपनीय रहा है।

यह यंत्र अपने-आप में अत्यन्त प्रभावशाली और श्रेष्ठ धनदायक यंत्र माना गया है। लगभग सभी तांत्रिकों और मंत्र मर्मज्ञों ने इस यंत्र की सराहना की है। प्राचीन समय में जितने भी आश्रम थे, उन आश्रमों में पूर्ण विधि-विधान के साथ कुबेर यंत्र की स्थापना अवश्य होती थी, जिससे कि आश्रम धन-धान्य से समृद्ध रहते थे, हजारों शिष्यों का पालन-पोषण होता था, और वे आश्रम राजाओं से भी ज्यादा समृद्ध माने जाते थे, उनके मूल में कुबेर यंत्र का ही प्रभाव था।

कहते हैं कि राजा रावण ने महादेव से कुबेर यंत्र प्राप्त किया था और इस यंत्र को सिद्ध किया था, जिसके फलस्वरूप वह और उसका राज्य पूर्णतः समृद्ध हो सका था और उसकी लंका सोने की बन गई थी।

मुझे जीवन में ऐसे कई अनुभव हुए हैं, जिनसे यह

ज्ञात होता है कि यह यंत्र अपने-आप में कितना अधिक प्रभावपूर्ण है। इस यंत्र की विशेषता यह है कि यह जीवन में पूर्ण समृद्धि देने में सहायक है, जिसके घर में यह यंत्र स्थापित होता है, उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

पिछले कुम्भ में **स्वामी प्रवज्यानन्द जी** ने लगभग दस हजार साधुओं को भोजन कराया था। मैंने उनसे जिज्ञासा व्यक्त की, कि उनके पास कौन-सी ऐसी साधना है, जिसके बल पर वे समृद्ध हैं और हजारों लोगों का पेट भरने में सक्षम हैं, उनका भण्डार या कोष कभी भी खाली नहीं होता?

उन्होंने मंद-मंद मुस्कराते हुए रहस्योद्घाटन किया कि उन्होंने कुबेर साधना सम्पन्न कर रखी है और उनके झोले में कुबेर यंत्र है, जिसके बल पर वे समृद्ध हैं, और जितना भी द्रव्य वे चाहते हैं, प्राप्त हो जाता है।

आबू से आगे वशिष्ठ आश्रम है, वहां पर भी एक साधु काफी समय पहले रहते थे, जिन्हें लोग नंगा बाबा कहते थे, और उनके पास एक झोला था, जिसमें से वे मनचाही वस्तुएं तथा खाद्य पदार्थ निकालते रहते थे, और उनके जीवन में आर्थिक अभाव कभी भी नहीं रहता था।

कुछ समय पहले उनका शरीर शांत हो गया, मृत्यु से पूर्व उन्होंने लेखक को बुलाया था, और अपने झोले से कुबेर यंत्र निकालकर देते हुए कहा था कि मेरे जीवन में जो कुछ भी

है या मैं जीवन में जो कुछ प्राप्त कर सका हूं, उसके मूल में यह कुबेर यंत्र ही है। तुम मेरे अत्यन्त प्रिय रहे हो, यद्यपि अब तुम गृहस्थ में चले गए हो, परंतु फिर भी तुम्हारी आत्मा साधुवत् है और मेरे मन में तुम्हारे प्रति अत्यन्त ऊंची भावना है, इसीलिए मैं यह कुबेर यंत्र तुम्हें देना अपना कर्त्तव्य समझता हूं।

उनका यह कुबेर यंत्र आज भी मेरे पास सुरक्षित है, और वास्तव में ही कलियुग में यह यंत्र आश्चर्यजनक सफलता एवं सिद्धि देने वाला है।

वास्तव में ही यह यंत्र अपने-आप में यंत्रराज है, और पूरे तंत्र-मंत्र के ग्रंथों में इस यंत्र को सबसे अधिक महत्त्व दिया गया है। यह अलग बात है कि यह यंत्र अपने-आप में गोपनीय रहा है, और सामान्य व्यक्तियों को सुलभ नहीं हो सका है।

यह यंत्र धातु का बना होना चाहिए, साथ ही साथ यह यंत्र केवल विजय काल में ही निर्मित होना चाहिए। जब इस यंत्र का निर्माण हो जाए, तब पूर्ण विधि-विधान के साथ प्राण-प्रतिष्ठा और चैतन्य विधान होना चाहिए, जिससे कि यह यंत्र पूर्ण प्रभाव युक्त हो सके।

गृहस्थ को शुभ स्थान पर इस यंत्र को स्थापित कर देना चाहिए और नित्य इसके दर्शन तथा इसके सामने सम्भव हो तो अगरबत्ती व दीपक लगाना चाहिए। यह यंत्र जिसके घर में या जिसके पास होता है, उसी को फलदायक होता है। किसी

विशेष नाम से यंत्र का निर्माण नहीं होता। **जिस प्रकार जहां पर भी दीपक लगाया जाता है, वहीं रोशनी हो जाती है, ठीक उसी प्रकार यह यंत्र जिस घर में भी होता है, उसी घर को ऊंचा उठाने व पूर्ण समृद्धि, सुख एवं सौभाग्य देने में सहायक होता है।**

इस प्रकार मंत्रसिद्ध यन्त्र प्राप्त होने के बाद इस पर पांच लाख मंत्र-जप करने से यह चैतन्य होता है।

विधान –

सर्वप्रथम इस यंत्र का निर्माण किसी सुपात्र या अच्छे वर्ण वाले व्यक्ति से विजय काल में ही कराना चाहिए, फिर इस यंत्र का षोडशोपचार पूजन कर इसमें प्राण-प्रतिष्ठा करनी चाहिए।

प्राण-प्रतिष्ठा के बाद निम्न विनियोग करना चाहिए–

विनियोग –

अस्य कुबेर मंत्रस्य विश्रवा ऋषिः, बृहतीश्छंदः। शिवमित्र धनेश्वरो देवता, दारिद्र्य विनाशने पूर्ण समृद्धि सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यान –

मनुजबाह्यविमान वरस्थितं गरुडरत्ननिभं निधिनायकम्।
शिवसखं मुकुटादिविभूषितं वरगदे दधतं भज तुंदिलम्।।

विरोचन -

इसके बाद करन्यास और अंगन्यास करना चाहि तथा सर्वतोभद्र मंडल बनाकर उस पर इस यंत्र को स्थापि करना चाहिए। उसके सामने ग्यारह दीपक लगाकर यं पर दुग्धधारा देते हुए निम्न मंत्र से अभिषेक करना चाहिए -

मंत्र -

ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः।

तत्पश्चात् दस हजार पुष्पों से अभिषेक कर पुष्पांजली देनी चाहिए और उस यंत्र पर निम्न कुबेर मंत्र का पांच लाख मंत्र-जप करना चाहिए, तब यंत्र सिद्ध होता है।

कुबेर मंत्र -

**ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्यादिगते,
धनधान्यसमृद्धिं मे देहि दापय स्वाहा।**

जब पांच लाख मंत्र-जप हो जाए, तब उसका दशांश घृत यज्ञ करना चाहिए, जिससे यंत्र सिद्ध हो जाता है।

इस प्रकार का सिद्ध यंत्र अपने-आप में ही दुर्लभ होता है, और वास्तव में ही यह यंत्रराज कहलाने में सक्षम है, क्योंकि आर्थिक उन्नति, व्यापार-वृद्धि एवं पूर्ण सुख-सौभाग्य प्राप्त करने के लिए, इससे श्रेष्ठ न तो कोई साधना है और न कोई यंत्र ही।

इस यंत्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि नित्य इसका पूजन आवश्यक नहीं है, अपितु केवल मात्र इसका दर्शन ही पर्याप्त है। इस यंत्र को घर के पूजा स्थान में, फैक्ट्री में, कारखाने में, उद्योग स्थान पर स्थापित किया जा सकता है। स्थापित करते समय भी किसी प्रकार के विधि-विधान की आवश्यकता नहीं होती, केवल मात्र इसकी उपस्थिति ही कुबेरवत् उन्नति देने में समर्थ है।

वास्तव में ही हम भारतवासी सौभाग्यशाली हैं कि हमारे पूर्वजों ने इतने श्रेष्ठ मंत्र एवं साधनाओं को हमारे सामने रखा और हम उसका लाभ उठाने में समर्थ हो सके हैं, पर जैसा कि तुलसीदास जी ने कहा है—

"सकल पदारथ है जग माहीं, भाग्यहीन नर पावत नाहीं।"

अतः इस प्रकार का यंत्र भाग्यशाली व्यक्ति ही अपने घर में स्थापित कर सकते हैं।

जीवन में पूर्णता, श्रेष्ठता, दिव्यता, उच्चता, समृद्धि, सुख-सौभाग्य, व्यापार-वृद्धि, आर्थिक उन्नति, पुत्र-सुख, दीर्घायु, स्वस्थता एवं सभी प्रकार के सुख-सौभाग्य प्रदान करने में यह यंत्र सक्षम है, क्योंकि अष्टलक्ष्मी साधना का समावेश स्वतः ही कुबेर यंत्र से हो जाता है।

★★★

भारतीय शास्त्रों में ग्रहण का महत्त्व माना गया है, परंतु मंत्र-तंत्र के साधकों के लिए ग्रहण विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि सामान्य दिनों की अपेक्षा ग्रहण के समय यदि किसी मंत्र की साधना की जाती है, तो यह विशेष रूप से उपयोगी और सफलतादायक होती है।

सामान्य दिनों में जो मंत्र-जप किया जाता है, उसकी अपेक्षा सौ गुना ज्यादा जल्दी फल ग्रहण के समय उसी मंत्र के जप से मिलता है, यह भी निश्चित है कि सामान्य दिनों में किसी मंत्र-जप से लाभ हो या न हो अथवा सफलता मिले या न मिले, परंतु ग्रहण के समय किसी भी मंत्र के जप से या साधना से सफलता मिलती ही है।

धारणा –

यह धारणा गलत है कि केवल तांत्रिक या मांत्रिक ही ग्रहण के समय का उपयोग करते हैं, हकीकत में देखा जाए, तो सामान्य गृहस्थ व्यक्तियों के लिए ग्रहण वरदान स्वरूप होता है, क्योंकि सामान्य गृहस्थ व्यक्तियों के जीवन में समस्याएं और कठिनाइयां कुछ ज्यादा ही होती हैं, जिनसे उन्हें निरंतर जूझना पड़ता है, और इसका उपयोग कर लिया जाता है, तो वे स्वयं इन बाधाओं का निराकरण कर सकते हैं।

यद्यपि सर्वत्र विद्वान् और पण्डित प्राप्त हो जाते हैं, परंतु यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक पण्डित अनुष्ठान या साधना में योग्य और सिद्धहस्त हो ही, इसके अलावा यदि पण्डित स्वार्थी और आलसी होता है, तो वह यजमान से धनराशि लेकर के भी मंत्र-जप या साधना नहीं करता, ऐसी स्थिति में फल का मिलना सम्भव कैसे हो सकता है? अतः इस ग्रहण का लाभ उठाकर सामान्य गृहस्थ व्यक्ति मंत्र-जप से अपनी समस्याओं का निराकरण कर सकता है और उसे सफलता मिल सकती है।

यह स्पष्ट है कि ग्रहण में मंत्र-जप करने से किसी भी प्रकार की हानि नहीं होती। प्राचीन काल में उच्चकोटि के राजा तथा गृहस्थ व्यक्ति ग्रहण काल का उपयोग भजन, पूजन,

चिन्तन, मंत्र-जप और समस्या के निराकरण के लिए करते थे।

धीरे-धीरे इस प्रकार की जानकारी लोप होती गई और सामान्य गृहस्थ ज्यादा से ज्यादा पण्डितों पर आश्रित होते गए, फलस्वरूप उन सामान्य गृहस्थ व्यक्तियों की समस्याएं बढ़ती गईं और इस प्रकार वे धीरे-धीरे कई कठिनाइयों में उलझते चले गए।

सही रूप में देखा जाए, तो ग्रहण एक प्रकार से गृहस्थ व्यक्तियों के लिए वरदान स्वरूप है, जिसका उपयोग वे अपनी समस्याओं के निराकरण में कर सकते हैं। ग्रहण काल में मंत्र-जप या कोई अनुष्ठान अथवा साधना करने से किसी भी प्रकार की हानि या बाधा नहीं आती, और न किसी प्रकार का विपरीत प्रभाव ही उसे देखने को मिलता है।

कुछ अज्ञानी पण्डितों ने यह भ्रम फैला दिया है कि ग्रहण काल में मंत्र-जप करने से लाभ अवश्य होता है, परंतु यदि मंत्र-जप गलत हो जाता है, तो उसका विपरीत फल भी भुगतना पड़ता है, जबकि ऐसी बात है ही नहीं। ग्रंथों में स्पष्ट रूप से विवरण मिलता है कि ग्रहण काल में कोई भी साधक, गृहस्थ, स्त्री या बालक मंत्र-जप या तांत्रिक साधना कर सकता है, यह अलग बात है कि उसे सिद्धि प्राप्त हो न हो, परंतु यदि मंत्र-जप में या साधना, अनुष्ठान में गलती भी हो जाती है, तो उसे किसी भी प्रकार का विपरीत प्रभाव नहीं भोगना पड़ता।

इन्द्र साधना

निम्न कार्यों के लिए इंद्र साधना सम्पन्न की जाती है –

१. विजय के लिए।

२. विदेश गमन के लिए।

३. विदेश स्थित सम्बन्धी की सुरक्षा के लिए।

कुबेर साधना

निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए यह साधना सम्पन्न की जाती है –

१. कर्जे से मुक्ति पाने के लिए।

२. व्यापारिक सफलता के लिए।

३. आर्थिक उन्नति के लिए।

४. वैभव और विलास प्राप्त करने के लिए।

५. जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्ति के लिए।

लक्ष्मी साधना

निम्न कार्यों की पूर्ति और सफलता के लिए इस ग्रहण काल में लक्ष्मी साधना सम्पन्न की जानी चाहिए –

१. आर्थिक लाभ के लिए।

२. स्थायी सम्पत्ति के लिए।

३. नौकरी लगने, प्रमोशन या व्यापार प्रारम्भ करने के लिए।
४. ऋण मुक्ति के लिए।
५. व्यापार में निरंतर उन्नति के लिए।
६. सभी प्रकार की सुख, समृद्धि और उन्नति के लिए।
७. गृहस्थ-सुख, पुत्र-सुख और शारीरिक-सुख के लिए।
८. जीवन के सभी प्रकार के भोग और मोक्ष प्राप्ति के लिए।

इस ग्रहण में सभी साधकों या गृहस्थ व्यक्तियों को चाहिए कि वे इस समय का पूरा-पूरा उपयोग करें, ऊपर जो साधनाएं मैंने बताई हैं, उनमें से कोई एक साधना सम्पन्न करें, यह भी हो सकता है कि पति कोई एक साधना सम्पन्न करे और उसकी पत्नी या पुत्र दूसरी साधना सम्पन्न करे। एक ही स्थान पर या एक ही कमरे में एक से अधिक साधनाएं सम्पन्न की जा सकती हैं। इस प्रकार के मंत्र-जप के लिए विशेष विधि-विधान की आवश्यकता नहीं होती और ग्रहण काल में मंत्र-जप करने से शीघ्र सफलता एवं मनोवांछित फल प्राप्त हो जाता है।

इस ग्रहण काल में योगी, साधु, संन्यासी, साधक, मांत्रिक और तांत्रिक तो साधनाएं सम्पन्न करेंगे ही, परंतु यदि सामान्य गृहस्थ इस समय का उपयोग करते हैं, तो निश्चय ही वे स्वयं अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर सकते हैं।

लक्ष्मी 'विजय की प्रतीक' मानी गई है, अतः इस ग्रहण काल में यदि विजय मंत्र का जप किया जाए, तो मुकदमे में सफलता, शत्रुओं पर विजय और प्रभावशाली व्यक्तित्व प्राप्त हो सकता है।

अब मैं प्रत्येक से सम्बन्धित साधना स्पष्ट कर रहा हूं, जिनको साधकों ने ग्रहण काल में सिद्ध कर सफलता पाई है, और गृहस्थ लोगों ने इसके आश्चर्यजनक परिणामों से प्रभावित होकर यह अनुभव किया है कि इस प्रकार की सफलता के लिए ग्रहण काल सर्वोत्तम होता है।

ग्रहण काल में साधना के लिए निम्न तथ्यों का पालन करना पड़ता है, इसके अलावा किसी भी प्रकार की जटिल विधि या उपकरणों की जरूरत नहीं पड़ती। सभी साधनाओं में केवल मात्र निम्न तथ्यों का ही पालन करना उचित होता है।

१. ग्रहण काल में मंत्र-जप किसी भी दिशा की तरफ मुंह करके बैठकर या खड़े होकर किया जा सकता है।
२. आसन ऊनी वस्त्र का होना चाहिए। ऊनी वस्त्र का आसन किसी भी रंग का हो सकता है।
३. मंत्र-जप आरम्भ करने से पूर्व स्नान करके बैठना चाहिए।
४. साधना काल में ग्रहण को नहीं देखना चाहिए।

५. साधना काल में किसी भी प्रकार की माला का उपयोग हो सकता है।

६. मंत्र-जप करते समय सामने दीपक लगा रहना चाहिए, यह तेल का दीपक होना चाहिए, और दीपक में किसी भी प्रकार का तेल उपयोग में लाया जा सकता है। मंत्र-जप करते समय यदि साधक चाहे, तो ऊनी वस्त्र पहिन सकता है या ओढ़ सकता है।

८. यदि समय हो तो ग्रहण काल में साधक एक से अधिक साधनाएं सम्पन्न कर सकता है।

ऊपर जो मैंने तथ्य बताए हैं, केवल मात्र उन्हीं तथ्यों का पालन करना चाहिए, मंत्र-जप ग्रहण काल में ही करना चाहिए।

अब मैं प्रत्येक साधना से सम्बन्धित मंत्र और जप संख्या स्पष्ट कर रहा हूं।

इन्द्र साधना

जैसा कि मैंने बताया, यह साधना विजय प्राप्ति के लिए, विदेश में कोई स्वजन है, तो उसकी सुख-शांति के लिए सम्पन्न की जाती है।

इस साधना की पूर्णता के लिए १५ माला फेरनी चाहिए, एक माला में १०८ दाने होते हैं। माला किसी भी प्रकार की हो सकती है।

मंत्र –

ॐ ऐं क्लीं व्रीं सर्वोन्नति प्राप्त्यर्थं व्रीं ऐं सर्व कार्य सिद्ध्यर्थे क्लीं इन्द्राय नमः।।

केवल मात्र इस मंत्र को जपने से ही इन्द्र से सम्बन्धित साधना सम्पन्न हो जाती है, और साधक कुछ ही दिनों में इस साधना का लाभ प्रत्यक्ष अनुभव करता है।

कुबेर साधना

यह साधना महत्त्वपूर्ण मानी गई है और इस ग्रहण काल में इस साधना का प्रयोग प्रत्येक गृहस्थ या स्त्री को करना चाहिए। किसी भी प्रकार के कर्जे से मुक्ति के लिए, यदि व्यापार, कमजोर चल रहा हो, तो उसकी उन्नति के लिए, बिक्री बढ़ाने के लिए, आर्थिक उन्नति के लिए, मकान या स्थायी सम्पत्ति प्राप्ति के लिए तथा जीवन में जो न्यूनताएं हैं, उनकी पूर्ति के लिए यह साधना सम्पन्न की जा सकती है।

इस साधना में साधक को ऊनी आसन पर बैठ जाना चाहिए, सामने किसी भी प्रकार के तेल का दीपक लगा लेना चाहिए, और लाल वस्त्र पर मंत्रसिद्ध **कुबेर यंत्र** स्थापित कर लेना चाहिए। यह साधना कुबेर यंत्र पर ही सिद्ध की जाती है, अतः साधना प्रारम्भ करने से पूर्व ही कुबेर यंत्र प्राप्त कर लेना

चाहिए, वह मंत्रसिद्ध होने के साथ-साथ प्राण-प्रतिष्ठा युक्त भी हो, तो निश्चय ही साधक को उद्देश्य की पूर्ति में सफलता मिलती है।

कुबेर यंत्र को सामने रखकर नीचे लिखे कुबेर मंत्र की केवल मात्र 99 माला फेरनी चाहिए और मंत्र-जप धीरे-धीरे उच्चारण के साथ करना चाहिए।

ग्रहण समाप्त होने के बाद प्रातःकाल उस यंत्र को अपनी दुकान, फैक्ट्री या कार्यालय में स्थापित कर देना चाहिए या चाहें तो उसे अपने घर के पूजा स्थान में अथवा तिजोरी में भी रखा जा सकता है। इसके बाद नित्य उस कुबेर यंत्र की पूजा आवश्यक नहीं होती।

मंत्र

ॐ ह्रीं यक्षाधिराज कुबेराय वैश्रवणाय अष्ट प्रकारेण उन्नति प्राप्त्यर्थं सर्वोन्नतिं साधय साधय ह्रीं ॐ नमः।

साधना-समाप्ति के कुछ ही दिनों के भीतर-भीतर साधक को अनुकूल फल अनुभव होने लगते हैं और वह स्वयं इस तथ्य को स्वीकार करता है कि ग्रहण काल में की गई साधना कितनी अचूक और सफलतादायक होती है।

लक्ष्मी साधना

इस साधना में साधक को स्नान कर आसन पर बैठ जाना चाहिए और सामने तेल का दीपक लगा लेना चाहिए। यह साधना आर्थिक लाभ के लिए, स्थायी सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए, कर्जे से मुक्ति पाने के लिए, प्रमोशन या नौकरी प्राप्त करने के लिए व व्यापार में निरंतर उन्नति के लिए और सभी प्रकार की सुख-समृद्धि और उन्नति के लिए सम्पन्न की जाती है।

यदि किसी साधक के घर में कन्या या पुत्र बड़ा हो गया हो और उसकी शादी नहीं हो रही है, अथवा विवाह में बाधाएं आ रही हों, तब भी यह साधना सम्पन्न करने से लाभ प्राप्त होता है। यदि पति-पत्नि में मतभेद हो या पति गलत रास्ते पर हो, तो उसकी अनुकूलता के लिए भी यह साधना सम्पन्न की जाती है।

साधक को इस साधना के लिए ऊनी आसन पर बैठ जाना चाहिए तथा सामने किसी भी प्रकार के तेल का दीपक लगा देना चाहिए, दीपक के पास (दीपक के किसी भी तरफ) **स्वर्णाकर्षण गुटिका** स्थापित कर देनी चाहिए, यह गुटिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है और इस पर कई प्रयोग सिद्ध किए जाते हैं।

इस स्वर्णाकर्षण गुटिका को सामने रखकर निम्न मंत्र की ११ माला फेरने मात्र से ही लक्ष्मी साधना सम्पन्न हो जाती है, और शीघ्र ही वह इसके आश्चर्यजनक परिणामों से प्रभावित होता है।

मंत्र –

ॐ ह्रीं ऐं अष्टलक्ष्म्यै धन-धान्य समृद्धिं देहि-देहि ऋण मोचन व्यापारोन्नति प्राप्त्यर्थं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यैं नमः।।

ग्रहण समाप्त होने के बाद प्रातःकाल उस गुटिका को अपनी तिजोरी या पूजा स्थान में रख देना चाहिए, इसके बाद नित्य इसकी पूजा आवश्यक नहीं होती, ऐसा करने पर वह गुटिका विशेष प्रभाव युक्त होकर साधक को मनोवांछित फल देने में सहायक होती है। भविष्य में यदि साधक चाहे तो इस गुटिका पर अन्य प्रयोग भी सम्पन्न कर सकता है, ऐसा करने पर पहले किए गए अनुष्ठान में कोई न्यूनता नहीं आती, इस प्रकार यह गुटिका १०८ प्रकार की साधनाओं के लिए उपयुक्त मानी गई है।

वस्तुतः ये साधनाएं अपने-आप में गोपनीय रही हैं और सैकड़ों वर्षों से भारतीय साधक इन साधनाओं का उपयोग करते रहे हैं, परंतु सर्वसाधारण के लिए यह मंत्र और साधनाएं सुलभ नहीं थीं। इस पुस्तिका का उद्देश्य गोपनीय तथ्यों को स्थायी रूप से सर्वसाधारण को देना है।

★★★

संसार की दुर्लभ,

अदभुत और सांस रोक कर पढने योग्य पुस्तकें...

रहस्य रोमांच जीवन को झकझोर कर रख देने वाली

पुस्तक श्रंखला एस-सीरिज में उपलब्ध हैं

तांत्रिक त्रिजटा अघोरी

भुवनेश्वरी साधना

अप्सरा साधना

सिध्दाश्रम

हंसा ! उडहू गगन की ओर

तारा साधना

तंत्र साधना

स्वर्ण साधना

उर्वशी साधना

शिव साधना

डॉ.नारायण दत्त श्रीमाली मार्ग,हाई कोर्ट कॉलोनी,जोधपुर